सफलता के पाँच सूत्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन सत्कर्मों का परिणाम है। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा शरीर प्राप्त होता है। भेद आत्मा में नहीं शरीर में है। चौरासी लाख जीव योनियों में जो भेद दिखलाई देता है वह आत्मा का नहीं बल्कि शरीर के स्तर पर है। पूर्व जन्म में जो जैसा बीज बोया है द्रव्य रूप में उसे वैसा शरीर प्राप्त होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु ये पाँचों जीव को पूर्वजन्म के कर्म के अनुसार ही प्राप्त होते हैं। सफलता या असफलता एक सिक्के के दो पहलू हैं। कुछ विचारकों के अनुसार इसके पीछे पुरुषार्थ का कारण है और कुछ विचारकों के अनुसार सफलता या असफलता में भाग्य कारण होता है। कारण कुछ भी हों मनुष्य को पुरुषार्थ करना चाहिए।

सफलता का प्रथम सूत्र है सकारात्मक दृष्टिकोण। जीवन में किसी को मिटाकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। जो व्यक्ति किसी को गिराने के लिए कुंआ खोदता है तो सबसे पहले खोदने वाला ही उसमें गिरता है। नकारात्मक दृष्टि से नहीं बल्कि सकारात्मक दृष्टि से आगे बढ़ना चाहिए। किसी का विनाश करके आगे नहीं बढ़ा जा सकता। विकास के अनेक मार्ग हैं जिसमें भाव क्रिया पहली दृष्टि है। भाव क्रिया का अर्थ है भाव के अनुसार कार्य करना। यदि भाव और क्रिया में अन्तर रहेगा तो सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। पढ़ते समय पढ़ने में मन लगाना, चलते समय चलने में, गाड़ी–मोटर चलाते समय चलाने में ध्यान लगाना चाहिए तभी आदमी गंतव्य तक पहुंच सकता है। यदि मन कहीं है और क्रिया कहीं की जा रही है तो उससे सफलता नहीं मिल सकती।

प्रतिक्रिया विरति जीवन में सफलता का दूसरा सूत्र है। यदि किसी ने आपको गाली दे दी तो उसे नजरदांज कर देना चाहिए। यदि गाली देने वाले को आपने भी गाली दे दी तो आप और उसमें क्या अन्तर। आपको अपना व्यक्तित्व ऐसा प्रदर्शित करना चाहिए जिससे सामने वाला

स्वयं परिवर्तित हो जाए। प्रतिक्रिया व्यक्त करने से लड़ाई–झगड़ा करने की नौबत आ सकती है। सभी के साथ मृदुभाषा का प्रयोग करना चाहिए। टकराव टालने का प्रयास करना चाहिए।

सफलता का तीसरा सूत्र है मैत्री भाव। सभी प्राणियों के साथ मैत्री करनी चाहिए। मैत्री भाव रखने से शत्रुता का विनाश हो जाता है। मैत्री के परमाणु सर्वत्र व्याप्त रहने से हिंसक भी अहिंसक बन जाता है। बुराई से बुराई और भलाई से भलाई प्राप्त होती है।

सफलता का चौथा सूत्र है मितभाषण। मितभाषण का अर्थ है कम बोलना, मधुर बोलना। वाणी में वह शक्ति है जो सभी को अपने वश में कर सकती है। बोलने की कला होनी चाहिए। सत्य, मधुर और प्रिय बोलना चाहिए। भाषा ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। विचार और व्यवहार में एकरूपता होनी चाहिए।

सफलता का पांचवा सूत्र है मिताहार अर्थात– आहार की मात्रा का निर्धारित होना। भोजन ऐसा होना चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ रहें। मनुष्य जैसा भोजन करता है वैसा ही उसका मन हो जाता है। तामसी भोजन करने वाले व्यक्ति तामसी प्रवृत्ति के होते हैं और सात्विक भोजन करने वाले सात्विक प्रवृत्ति के होते हैं। शरीर को चलाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। बिना भोजन के शरीर चल नहीं सकता। अन्न एक प्रकार का प्राण कहा गया है। अन्न और मन का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसीलिए कहा जाता है कि जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। अन्न के प्रभाव से ही मन की सोचने समझने की शक्ति विकसित होती है।

प्राचीन काल से ही आपसी रिश्तों में घनिष्ठता और प्रेम बढ़ाने के लिए लोग रिश्तेदारों और मित्रों को अपने घर खाने पर आमंत्रित करते थे। भोजन सबके यहां नहीं किया जाता। क्योंकि कुधान्य खाने से पाप बढ़ता है और पुण्य नष्ट होता है। किसी भी महिला की पहचान उसके चरित्र से होती है। चरित्रवान महिला ही अपने गुणों से घर को स्वर्ग बना देती है। ऐसी स्त्री के घर में अन्नपूर्णा माता स्वयं निवास करती है। उसकी रसोई में पका भोजन प्रसाद समान होता है। इसके विपरित चरित्रहीन महिला का भोजन खाया जाये तो खाने वाले पर उसके चरित्र में बसी नकारात्मकता का संचार होने लगेगा। जब कोई व्यक्ति खाना बनाता है तो उस खाने में उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुण भी आ जाते है। अतः जो व्यक्ति स्वभाव से गुस्सा

करता हो उसके हाथ का बना भोजन नहीं करना चाहिए। अन्यथा उसके गुस्से का अवगुण भीतर समाविष्ट हो सकता है।

धर्म शास्त्रों में किन्नरों को दान देने का अत्यधिक महत्व बतलाया गया है। मान्यता यह है कि इन्हें प्रसन्न करने के असीम सुख की प्राप्ति होती है। कौन किस भाव से दान दे रहा है यह कोई नहीं जानता। इसलिए उनके घर भोजन नहीं खाना चाहिए। जो लोग अपने घर में नौकरों का ठीक ढ़ंग से ध्यान न रखते हो उन्हें बेवजह परेशान करते हो उनके यहाँ भोजन नहीं खाना चाहिए। जिस घर में भ्रष्टाचार का धन आता है और उस धन से यदि परिवार का भरण–पोषण होता है तो उस घर के लोगों का मन, वाणी और बुद्धि विकृत हो जाता है।